International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

भारतेन्दु हरिश्चंद्र के काव्य में नारी

Junti Duarah, Research Scholar, Dept. of Hindi, Himalayan University, Arunachal Pradesh
Dr. Govind Dwivedi, Professor, Dept. of Hindi, Himalayan University, Arunachal Pradesh

सार

प्रकृति और पुरुष सृष्टि के दोनों आधर हैं। जो एक–दूसरे के पूरक हैं। एक के अभाव में सृष्टि असम्भव। प्रकृति नारी का पर्याय है। परमब्रह्म परमेश्वर को भी प्रकृति, माया की अनिवार्यता स्वीकार करनी पड़ी। शिव भी शक्ति के अभाव में अधूरे थे। अतः वे अर्धनारीश्वर कहलाते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र भारतेन्दु हरिश्चंद्र के काव्य में नारी के बारे में है। ये शोध पत्र में नारी की समस्या और उनके विवेक के विषय में भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा बताया गया है। गद्य की सहायता से इस शोध पत्र को पूर्ण करा गया है।

मुख्य शब्दः पुरूष, स्त्री, प्रकृति

1. प्रस्तावना

भारतेंदु ने न केवल नई विधाओं का सृजन किया बल्कि वे साहित्य की विषय–वस्तु में भी नयापन लेकर आए. इसलिए उन्हें भारत में नवजागरण का अग्रदूत माना जाता है. उनसे पहले हिंदी साहित्य में मध्यकाल की प्रवृत्तियां मौजूद थीं, इसलिए उनसे पहले का का साहित्य दुनियावी जरूरतों से बिल्कुल कटा हुआ था. साहित्य का पूरा माहौल प्रेम, भक्ति और अध्यात्म का था. इसे अपने प्रयासों से उन्होंने बदल डाला. उन्होंने हिंदी साहित्य को देश की सामासिक संस्कृति की खूबियों के साथ–साथ पश्चिम की भौतिक और वैज्ञानिक सोच से लैस करने की भरसक कोशिश की।

आधुनिक विचार ईश्वर और आस्था की जगह मानव और तर्क को केंद्र में रखता है, इसलिए इसके प्रभाव में रचा गया साहित्य लौकिक जीवन से जुड़ा होता है. लेकिन उस समय का भारत गुलामी और मध्यकालीन सोच की जंजीरों में जकड़ा था. भारतेंदु पर भारतीय संस्कृति के अलावा आधुनिक और पश्चिमी विचारों का भी असर था. इसलिए वे साहित्य में बुद्धिवाद, मानवतावाद, व्यक्तिवाद, न्याय और सहिष्णुता के गुण लेकर आए. उन्होंने अपनी लेखनी से लोगों में अपनी संस्कृति और भाषा के प्रति प्रेम की अलख जगाने का प्रयास किया।

1850 के आसपास के भारत में भ्रष्टाचार, प्रांतवाद, अलगाववाद, जातिवाद और छुआछूत जैसी समस्याएं अपने चरम पर थीं. हरिश्चंद्र बाबू को ये समस्याएं कचोटती थीं. इसलिए उन्होंने इन समस्याओं को अपने नाटकों, प्रहसनों और निबंधों का विषय बनाया. वे उन चंद शुरुआती लोगों में से थे जिन्होंने साहित्यकारों से आह्वान किया कि वे इस दुनिया की खूबियों–खामियों पर लिखें न कि परलोक से जुड़ी व्यर्थ की बातों पर.

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

अपनी मंडली के साहित्यकारों की सहायता से उन्होंने नए–नए विषयों और विधाओं का सृजन किया. कुल मिलाकर उन्होंने पुरानी प्रवृत्तियों का परिष्कार कर नवीनता का समावेश करने की कोशिश की।

वर्तमान में प्रचलित सभी काव्य–पद्धतियों की जड़ें आदिम युग के काव्य में पाई जाती हैं। जब मनुष्य विकास की प्रारंभिक अवस्था में था, उस काल में भाषा के उदय के साथ–साथ काव्य का भी उदय हुआ। आदिम युग के मानव समाज में, काव्य का मुख्य रूप गीतवाद के मूल रूप में प्रकट होता है। काव्यशास्त्रियों और विद्वानों का मानना है कि मानव जाति की सबसे प्रारंभिक कविता सामूहिक नृत्य–गीत के रूप में रही होगी। उस समय, नृत्य–गीत मुख्य रूप से कलात्मक मनोरंजन के साधनों में से थे। भारत में आज के समय में भी आदिवासी जातियों के त्योहारों और त्योहारों का मुख्य हिस्सा नृत्य–गीत और संगीत है। अतः यह अनुमान लगाना सहज है कि जिस प्रकार वर्तमान आदिवासियों के सुख–दुःख के अवसरों में यज्ञ, यज्ञ, नृत्य–गीत आदि सम्मिलित हैं, उसी प्रकार सभ्य जातियों में भी यह सब होता रहा होगा। इस युग के सामूहिक नृत्य–गीत को ही इसका गीतकार कहा जा सकता है।

साहित्यशास्त्रियों के विचार में काव्य में भाव तत्त्व का अभिप्राय उस विशेष भावधरा से है जो किसी भी काव्य के मूल में अन्तर्निहित होता है। यह वह मुख्य भावना होती है जो काव्य–रचना के मूल में उपस्थित रहती है। कविगण उसका चयन जीवन से करते हैं। वह किसी भी तरह का हो सकता है। जैसे–वीर भाव, देश–प्रेम का भाव, प्रेम भाव, प्रकृति प्रेम का भाव, नारी–सौन्दर्य का भाव आदि। भाव प्रधनतया दो प्रकार के होते हैं

दुःखात्मक और सुखात्मक। इन्हें ही द्वेष एवं राग के नाम से ही जाना जाता है। कुछ साहित्यकार विचारक–इन्द्रिय जनित, प्रज्ञात्मक एवं गुणात्मक भाव नामक शीष र्कों के अन्तर्गत रखकर इसका विवेचन करते हैं। प्रायः कविता में प्रकट हुए सभी भाव जीवन के विभिन्न क्षेत्राों से ही स्वीकृत होते हैं। कवि अपनी तरपफ से उनमें विभिन्न अनुभूतियों को वाणी देता है। काव्य को सिर्फ भाव–भावित होना ही पर्याप्त नहीं, बल्कि उसे बुद्धि–बोध्ति भी होना जरूरी है। भाव के कारण जहाँ उसमें रमणीयता आती है वहीं बुद्धि की वजह से वह विचारित–सुख भी बनता है। कविता में कई जगह ऐसे भी होते हैं। जहाँ कवि को लोक–व्यवहार आदि का ज्ञान, गंभीर, जीवन–दर्शन, जीवन की विभिन्न समस्यायें तथा उनके समाधन भी प्रस्तुत करना पड़ता है। ऐसे स्थानों का सम्बन्ध भाव की तुलना में बुद्धि और दिमाग से ही ज्यादा होता है। वैचारिक सिद्धि के लिए काव्य में बुदि तत्त्व का संयोग होना अति आवश्यक है। पश्चिम के आचार्यों ने कविता का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं सशक्त तत्त्व कल्पना को माना है। कल्पना को व्युत्पन्न करने वाला संस्कृत का 'क्लृप' ;मानसिक सृष्टि करताद्ध व अँग्रेजी के 'इमेज' ;मानसिक चित्राद्ध का पयार्यवाची है। काव्य में कल्पना तत्त्व का आशय वैसी ताकत स जिसके माध्यम से अप्रत्यक्ष और अमूर्त वस्तु को प्रत्यक्ष

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

तथा मूर्त रूप प्रदान किया जाता है। पर ध्यान देने वाली बात यह है कि कल्पना को कविता के लिए जितना ज्यादा महत्त्व पाश्चात्य आचार्यों ने प्रदान किया है उतना महत्त्व हमारे भारतीय आचार्यों ने नहीं दिया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कल्पना को काव्य का सिर्फ बोध तत्त्व ही मानते थे। यहाँ कुछ लोगों की आपत्ति यह है कि कल्पना को मात्रा काव्य का बोध पक्ष मानना उसकी शक्ति को सीमित कर देना है। कल्पना के माध्यम से निर्मित किये गये चित्राों का सम्बन्ध न सिर्फ वर्तमान से होता है, बल्कि भूत एवं भविष्य से भी होता है। इसी तरह से वह ध्वनि चित्रा, गन्ध चित्रा, स्पर्श चित्रा, चाक्षुष चित्रा, रेखाचित्रा, वर्णचित्रा, स्थिर चित्रा, प्रकृति चित्रा, स्मृति चित्रा, गत्यात्मक चित्रा, स्थूल भौतिक चित्रा, सूक्ष्म और संवेदनात्मक मानसिक चित्रा इत्यादि को भी अंकित करने में सभी तरह से सक्षम होती है। कल्पना के अभाव में सूक्ष्म भावों के चित्रा प्रस्तुत करना असंभव हो जाता है। हमने यह अनुभव किया है कि विश्व के महान कवियों में कल्पना शक्ति अपरिमित एवं असीमित होती है जिसके माध्यम से वे अपनी रचनाओं में जीवनानुभूतियों की गम्भीर एवं सुन्दरतम अभिव्यक्ति करने में सक्षम होते हैं। काव्य का अन्तिम विवेचनीय तत्त्व रूप है। रूप तत्त्व का सम्बन्ध कविता के छन्दों विधन से है। काव्य का छन्दोविधन काफी कुछ उसके भाव–विधन पर निर्भर रहता है। हिन्दी कविता में प्रायः वार्णिक, मात्रिाक एवं मुक्तक–तीन प्रकार के छन्द प्रयोग किये जाते हैं। छन्दोविधन की प्रकृति भारतीय भाषाओं की कविताओं में प्रायः एक समान ही है।

आदिकाल से नारी भारतीय समाज में पुरुषसत्ता द्वारा बनायी गयी मान्यताओं को ही ढोती आयी हैं। आँसुओं की नदी में गोता लगाती आयी है। नारी की व्यथा–कथा अनन्त व अतिविस्तृत है। प्रारम्भिक काल से ही नारी पर पुरुषवादी सत्ता लादी गयी थी। इसी वजह से नारी कभी अपना स्वत्व स्पष्ट नहीं सकी। नारी ही वास्तव में इस सृष्टि की रचयिता है जो आज तक उसे पालती–पोषती आ रही है। फिर भी सृष्टि की विडम्बना यही रही कि वह सदैव नारी की अवहेलना ही करती रही। नारी जन्मकाल से लेकर अपने निर्वाण तक के मार्ग में न जाने कितने रिश्ते को एक साथ जीती है तथा अपने कर्तव्यों को हँसी–खुशी निर्वाह करती है। इसके बावजूद उसे प्यार के मीठे वचन भी नसीब नहीं होते हैं। यह मानव समाज की विडम्बना नहीं है तो और क्या है?

2. नारी बुद्धि

नारी बौद्धिकता की बात करते समय सर्वप्राथम हमारा ध्यान वैदिक युग की ओर आकर्षित होता है। वैदिक काल में वर्तमान समय की भॉति शिक्षा–व्यवस्था नहीं थी। वैदिक युग में वर्तमान समय के रूप में कोई शिक्षा प्रणाली नहीं थी। उस समय, गुरुकुल परंपरा एक सजा थी। तत्कालीन समाज में पुरुषों को एक गंभीर व्यक्ति माना जाता था, एक ही सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए, सभी सामाजिक, परिवार, नैतिक दंड

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

तय किए गए थे। जिसके कारण समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था, उन बाधाओं से वंचित थे, जिनका सामना किया गया था। इन सबके बावजूद, कुछ महिलाओं को वैदिक युग में बौद्धिक स्तर पर बहुत सशक्त बनाया गया था, जिसका नंबर बहुत कम था। वैदिक कालीन कटुशी साधसी नरिस–की विश्व, अपला, गर्ग, डरावनी, घोष और मात्रीणी का नाम है। उनकी बौद्धिक क्षमता के लौह ने भी महान भाषा को स्वीकार कर लिया है।

स्त्रियों की अवस्था की जानकारी हेतु नारी–शिक्षा अति–आवश्यक कारक है। जिस समाज में नारियों को स्वतन्त्रता होगी, उसमें पुरुषों की शिक्षा के साथ–साथ नारियों की शिक्षा की भी व्यवस्था होगी। जिस समाज में नारी–शिक्षा नाममात्रा की होगी या पुरुषों की तुलना में कम होगी उस समाज में नारियाँ स्वतंत्रा नहीं हो सकती हैं।

3. नारी समस्या

महिलाओं की समस्या; यह कहा जा सकता है कि अनावश्यक महिला को सामान्य जीवन खर्च करना मुश्किल कहा जा सकता है। वे अपने पग–पीएजी पर खड़े हैं। जब उसका जीवन इस बोझ की दौड़ में गुजरता है, तो वह खुद को नहीं जानता। सबसे पहले, गर्भ में नौ महीने भारी हैं, यह लड़का–लड़की का खेल बचाया जाता है, फिर मां की गोद या राम भवो मिल गई। वह कभी भी आधा समय उपलब्ध नहीं पाएगा। जब तक महिला घर समाज में रहती है, तब तक इसका पूर्ण व्यक्तित्व, उसका जीवन अपने शरीर तक ही सीमित हो जाएगा। यही है, महिला के शरीर का अधिकार सिर्फ उसका स्वामी है। मास्टर संपत्ति में बहुत कुछ डालता है – जैसे भूमि, सोने और चांदी, हीरा–रत्न, गाय–बुल्स, घोड़े–हाथी, दास और उनकी अपनी पत्नियां। यदि वह देश में युद्ध में जीतता है, न केवल राज्य, धन, धन, दास और देवियों भी जीतता है। यही कारण है कि इस पितृसत्तात्मक समाज में महिला का व्यक्तित्व अपने शरीर की सीमाओं तक ही सीमित था। उनकी कामुकता को उनकी प्रतिष्ठा के मानदंड के रूप में माना जाता है। बलात्कार का अपना सामाजिक दर्शन है। महिलाओं और शरीर के प्रति जिज्ञासा, जिज्ञासा, आकर्षण हो सकता है, लेकिन इसकी अवधि बहुत कम है। किशोरों से युवा लोगों का समय मन में जिज्ञासा पैदा कर सकता है। ऐसी कई घटनाएं समाज के सामने भी आ गई हैं। एक बलात्कारी लड़की का जीवन बंद हो जाता है। वह समाज में सच्चाई जीने के लिए शापित हो जाता है, जबकि उसके पास उस अधिनियम में कोई गलती या अपराध नहीं होता है। यह उनके जीवन में ऐसी चोट या घाव होगा जो अपने पूरे जीवन में रहता है। इस अधिनियम में, उसका इरादा हिल गया है, जिसे वह जीवन को नहीं भूलता है। योग माया है, महिला पाप की जड़ है। महिला एक ऐसी चीज है जो मनुष्य सच्चाई से भटकती है। इस तरह के आरोपों को हर धर्म

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

के ग्रंथों में बताया गया है। इस कारण से, प्रावधानों में विभिन्न दंड और दंड दिए गए हैं। महिला धर्म पति और बच्चों की सेवा करने की मात्रा है। जो भी पति, जो भी होता है – घर परिवार का गायब होना, पत्नी का अपमान, लेकिन पति की सेवा पहला और अंतिम धर्म है। वह सिर्फ पति के लिए रहता था और उसे पति की तरह नहीं रखा जाता था। पति की मृत्यु के बाद, चाहे वह मर जाए या वही हो। सिर, उपवास, भीख मांगना, तीर्थयात्रियों में रहना और अपना जीवन पास करना। यह विभिन्न धर्मों में वर्णित है।

नारी के बाहरी समस्याओं से आशय यह है कि नारी की पारिवारिक, सामाजिक व शारीरिक समस्याएँ क्या हैं? इसके अन्तर्गत नारी द्वारा भोगे गए शारीरिक कष्ट को ही ध्यान में रखा जाता है। परन्तु कहीं–न–कहीं इसमें उसे मानसिक कष्ट भी मिलता है। बाहरी तौर उसे तो मात्रा दहेज, भ्रूण हत्या, दहेज हत्या, घर–परिवार में या समाज में नारी द्वारा ही नारी अपमान को सहन करना पड़ता है। प्रायः नारी ही यह भूल जाती है कि कभी वह भी इन समस्याओं से दो–चार हुई है। समय के साथ वह भी बदल जाती है। वह भी अपने साथ हुए दुर्व्यवहार को अपने जीवनचर्या का अंग मानते हुए अग्रिम पीढ़ी की नारी के साथ वैसा ही बर्ताव करती है जैसा कि उसके साथ हुआ था, तभी तो यह कहावत काफी विख्यात है कि नारी ही नारी की दुश्मन है। अतः यह क्रम वर्तमान में जारी है यह विचारणीय बिन्दु है।

4. निष्कर्ष

प्रस्तुत कार्य भरतेंदु के लिखित और कविता में वर्णित महिलाओं और पात्रों और नायिकाओं के संबंध में है भारतेंदु हरीशचंद्र की हिंदी कविता में। भरतेंदु हरिश्चंद्र ने अक्सर सभी विधायिकाओं में योगदान दिया है। उन्होंने विशेष रूप से देश–प्रेम, भक्ति पर अपना लेखन लाया है। राष्ट्रवाद, हिंदी भाषा का विकास, विशेष रूप से सामाजिक शिक्षा पर। ये बहुमुखी प्रतिभा समृद्ध थी। उनकी रचनाएं हिंदी और उर्दू दो भाषाओं में पाए जाते हैं। इस शोध का विषय हिंदी से है, जो देवनागरी से भी है। कविता के लिए भी प्रमुखता है। भरतेंदु हरीशचंद्र के पास उनकी कविता में सुरदास और कृष्णभक्ता मेरबाई की कई पद हैं, कई प्रमाणपत्र भी रितिकलिन कवि कवियों की तर्ज पर लिखे गए हैं, जैसे लोगों के कवियों, लावी और मुक्स्ट भी लिखे गए हैं। उनमें से ज्यादातर ने ब्राजभशा का उपयोग किया है । लेकिन उनकी रचनाएं ऊर्ध्वाधर बोली में भी उपलब्ध हैं। उन्होंने रोमांटिक कविताओं को भी लिखा है।

प्रस्तुत शोघ पत्र में भारतेन्दु जी द्वारा दर्शाये गए नारी समस्या,नारी बुद्धि पर प्रकाश डाला गया है।प्रस्तुत शोध पात्रिका में मुख्य बिन्दु नारी है। नारी ईश्वर की वह अद्भुत रचना है जिसके अभाव में परिवार, समाज और राष्ट्र की कल्पना करना भी असंभव है। अगर स्त्री ही न हो तो मानवीय समाज का अहित होना स्वाभाविक है। अगर पुरूष शरीर है तो स्त्री रूह है। स्त्री का विकल्प आज तक कोई नहीं है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भारतेंदु के काव्य में नारी के उन समस्त बिन्दुओं पर विचार मिलता है जिससे उसके सामाजिक, पारिवारिक जीवन, मानसिक, शारीरिक विकास, आदि सभी पहलुओं पर प्रकाश पड़ सके तथा यह भी प्रयास है कि उसका जीवन सरल, सहज हो व मानवीय उच्चताओं को प्राप्त कर सके।

5. सन्दर्भ सूची

- गीतिकाव्य का उद्‌भव और विकास, डॉ. उमाशंकर तिवारी, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृ. 291
- काव्यशास्त्रा विमर्श, ले. कृष्ण नारायण प्रसाद 'मागध', वाणी प्रकाशन दिल्ली, पेज–26
- वही, पेज–38
- काव्यशास्त्रा विमर्श, ले. कृष्ण नारायण प्रसाद 'मागध', वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पेज–39 5. काव्य प्रकाश, आचार्य मम्मट, पृ. 18
- वही, पृ. 19
- काव्य प्रकाश, प्रथम उल्लास, आचार्य मम्मट, पृ. 6